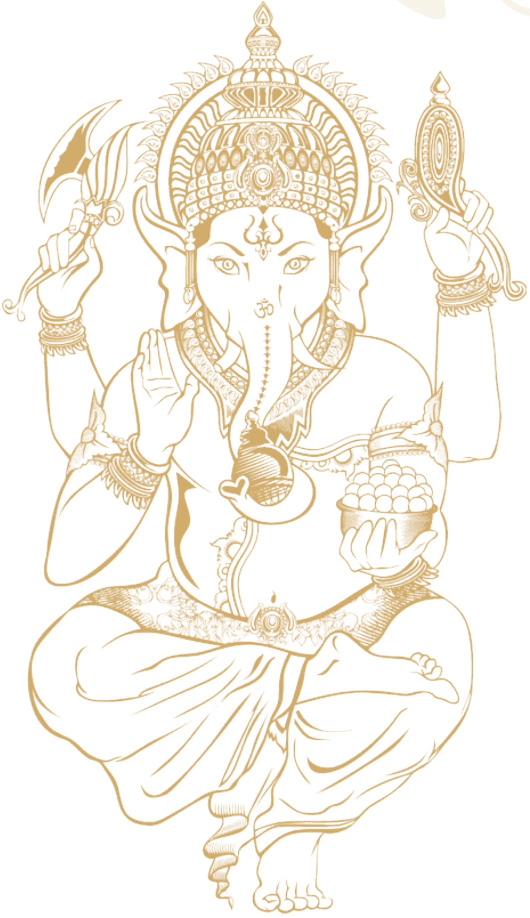

Jagdish

27 Nov 1969

04:38 PM

Sabathu

Model: Baby-Horoscope

Order No: 121939701

तिथि 27/11/1969 **समय** 16:38:00 **वार** गुरुवार **स्थान** Sabathu **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:26:15
अक्षांश 31:00:00 उत्तर **रेखांश** 76:59:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:22:04 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	20:40:41 घं	गण	देव
वेलान्तर	00:12:26 घं	योनि	मार्जार
सूर्योदय	06:59:03 घं	नाड़ी	आद्य
सूर्यास्त	17:20:08 घं	वर्ण	शूद्र
चैत्रादि संवत	2026	वश्य	मानव
शक संवत	1891	वर्ग	मार्जार
मास	मार्गशीर्ष	युँजा	मध्य
पक्ष	कृष्ण	हंसक	वायु
तिथि	4	जन्म नामाक्षर	के-केवल
नक्षत्र	पुनर्वसु	पाया(रा.-न.)	रजत-रजत
योग	शुभ	होरा	सूर्य
करण	बव	चौघड़िया	शुभ

विंशोत्तरी		योगिनी	
गुरु 15वर्ष 3मा 10दि		पिंगला 1वर्ष 10मा 27दि	
केतु		सिद्धा	
09/03/2021		25/10/2025	
09/03/2028		25/10/2032	
केतु	05/08/2021	सिद्धा	06/03/2027
शुक्र	05/10/2022	संकटा	25/09/2028
सूर्य	10/02/2023	मंगला	05/12/2028
चन्द्र	11/09/2023	पिंगला	26/04/2029
मंगल	07/02/2024	धान्या	25/11/2029
राहु	25/02/2025	भ्रामरी	05/09/2030
गुरु	01/02/2026	भद्रिका	26/08/2031
शनि	12/03/2027	उल्का	25/10/2032
बुध	09/03/2028		

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			00:57:25	वृष	कृतिका	2	सूर्य	राहु	---	0:00			
सूर्य			11:36:08	वृश्चि	अनुराधा	3	शनि	चंद्र	मित्र राशि	1.28	पुत्र	पितृ	सम्पत
चंद्र			20:36:03	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	गुरु	मित्र राशि	1.16	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल			23:05:50	मक	श्रवण	4	चंद्र	सूर्य	उच्च राशि	1.11	अमात्य	भ्रातृ	वध
बुध		अ	17:50:51	वृश्चि	ज्येष्ठा	1	बुध	बुध	सम राशि	1.01	मातृ	ज्ञाति	विपत
गुरु			03:07:07	तुला	चित्रा	3	मंगल	शुक्र	शत्रु राशि	1.08	कलत्र	धन	मित्र
शुक्र			27:34:58	तुला	विशाखा	3	गुरु	शुक्र	स्वराशि	1.08	आत्मा	कलत्र	जन्म
शनि	व		09:50:50	मेष	अश्विनी	3	केतु	शनि	नीच राशि	1.01	ज्ञाति	आयु	क्षेम
राहु	व		24:02:22	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	जन्म
केतु	व		24:02:22	सिंह	पू०फाल्गुनी	4	शुक्र	बुध	शत्रु राशि		---	मोक्ष	प्रत्यारि

लग्न-चलित

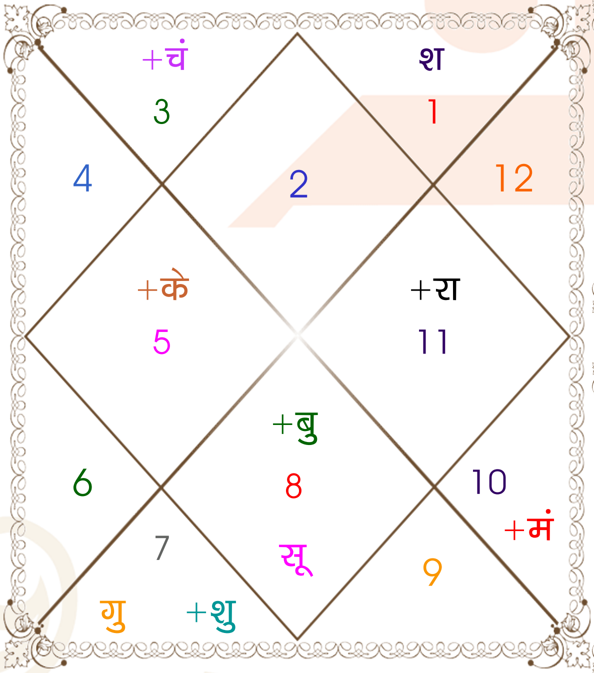

चन्द्र कुंडली

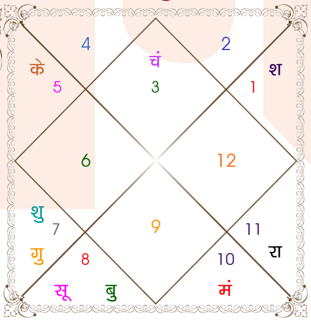

नवमांश कुंडली

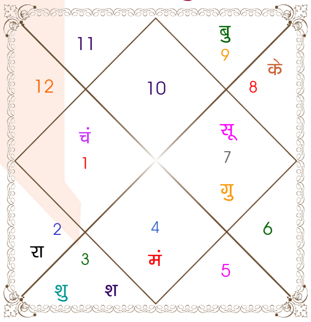

सर्वाष्टकवर्ग

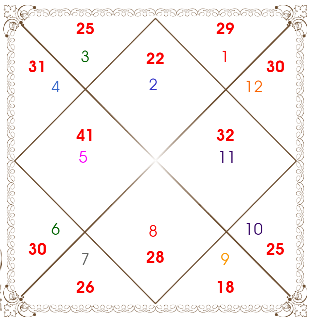

दशमांश कुंडली

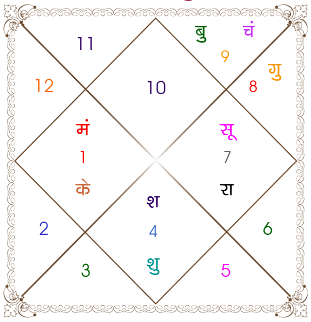

नक्षत्रफल

आपका जन्म पुनर्वसु नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्मराशि मिथुन तथा राशि स्वामी बुध होगा। नक्षत्रानुसार आपका गण देव, योनि मार्जार, वर्ग मार्जार, नाड़ी आद्य तथा शूद्र वर्ण होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "के" अक्षर से होगा। यथा केशव।

आप अत्यन्त ही शान्त स्वभाव के होंगे तथा संकट की स्थिति में भी घबराहट या उतावलेपन का परिचय नहीं देंगे अपितु शान्तिपूर्वक उनका सामना करेंगे। आपका जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा तथा आप समस्त सांसारिक तथा भौतिक सुखों के उपभोग करने में सफलता प्राप्त करेंगे। शारीरिक दृष्टि से आप सुन्दर, गौरवर्ण तथा भाग्यशाली पुरूष होंगे। समाज में आप अति लोकप्रिय रहेंगे तथा समाज के सभी वर्गो के कल्याण के लिए आप सर्वथा प्रयत्नशील रहेंगे। जीवन में पुत्र तथा मित्रों से आप हमेशा युक्त रहेंगे।

शान्तः सुखी च सम्भोगी सुभगो जनबल्लभः।
पुत्रमित्रादिभिर्युक्तो जायते च पुनर्वसौ।।
मानसागरी

अर्थात् पुनर्वसु नक्षत्र में उत्पन्न जातक, शान्त सुखी, भोगी, सुन्दर, लोकप्रिय तथा पुत्र एवं मित्रों से युक्त होता है।

आपका स्वभाव सुशील एवं आचरण श्रेष्ठ होगा। यदा कदा आपकी बुद्धि दुष्टता की ओर भी अग्रसर होगी तथा आपकी प्रवृति दुष्कार्य करने को प्रवृत होगी। आप हमेशा अपने को अतृप्त सा अनुभव करेंगे तथा इसके कारण आपको व्याकुलता का भी आभास होगा। परन्तु आपकी प्रवृति सन्तोषी होगी तथा वस्तु की अल्प प्राप्ति में ही आप सन्तुष्ट हो जाएंगे।

दान्तः सुखी सुशीलो दुर्मेधा रोगभाक् पिपासुश्च।
अल्पेन च सन्तुष्टः पुनर्वसौ जायते मनुजः।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् पुनर्वसु में उत्पन्न जातक क्लेश की स्थिति में भी सहनशील, सुखी, सुशील, दुष्टबुद्धिवाला, तृषाकुल तथा थोड़े से ही सन्तुष्ट होने वाला होता है।

आपकी आत्मा ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित रहेंगी तथा गूढ़ से गूढ़ विषयों का आपको ज्ञान रहेगा। आप अपने धनैश्वर्य तथा बल से समाज में प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। लेखन कार्य में आपकी नैसर्गिक इच्छा रहेगी तथा कविता सृजन में आप सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही आपके मन में कामेच्छा की भी बहुलता रहेगी।

गूढात्मा च पुनर्वसौ धनबलविख्यातः कविः कामुकः।
जातकपारिजातः

अर्थात पुनर्वसु में उत्पन्न जातक गूढात्मा, धन तथा बल से विख्यात, कवि तथा कामुक प्रकृति का होता है।

आपके मित्रों की संख्या अधिक मात्रा में रहेगी तथा शास्त्राध्ययन में भी आपकी रूचि रहेगी। आप यत्नपूर्वक शास्त्र ज्ञान प्राप्ति के लिए अभ्यासरत रहेंगे। आप रत्न तथा स्वर्णादि से निर्मित आभूषणों से भी सुशोभित रहेंगे। आपकी प्रवृति भी दानशील होगी साथ ही आप बहुत से द्रव्यों तथा भूमि आदि से जीवन में युक्त रहेंगे।

प्रभूतमित्रः कृतशास्त्रयत्नः सद्रत्नचामीकरभूषणाढ्यः।
दाता धरित्री वसुभि समेतः पुनर्वसु यस्य भवेत्प्रसूतौ।
जातकाभरणम

अर्थात् पुनर्वसु में उत्पन्न जातक अधिक मित्रों वाला, शास्त्रों का अभ्यास करने वाला, रत्नस्वर्णादि आभूषणों से परिपूर्ण, दान, द्रव्य एवं भूमि से युक्त होता है।

आप का जन्म रजत पाद में हुआ है। अतः धन सम्पति से आप सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में आपके पास इसका अभाव नहीं रहेगा। साथ ही समस्त भौतिक सुखसंसाधनों को आप प्राप्त करेंगे एवं सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा दानशीलता की प्रवृति भी आपके मन में नित्य विद्यमान रहेगी। साथ ही सहनशीलता के भाव से भी आप युक्त रहेंगे। आप अपने सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में प्रायः सफलता ही अर्जित करेंगे। आप की शारीरिक कान्ति दर्शनीय रहेगी तथा मुखाकृति सुन्दर एवं आकर्षक होगी। समाज में आप एक आदरणीय एवं श्रद्धेय पुरूष समझें जाएंगे। आप विस्तृत परिवार के भी स्वामी होंगे। अपने सम्भाषण में आप नित्य प्रिय एवं मधुर वाणी का उपयोग करेंगे तथा सभी प्रकार के सांसारिक सुखों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। विद्याध्ययन में आप रूचिशील रहेंगे तथा एक विद्वान के रूप में भी आप ख्याति प्राप्त करेंगे। इसके साथ ही आप अल्प मात्रा में बोलना पसन्द करेंगे।

आपका जन्म मिथुन राशि में हुआ हैं। अतः आपके नेत्र श्यामवर्ण के होंगे तथा सिर के बाल घुंघराले होंगे एवं नासिका भी उन्नत होगी। आप विभिन्न प्रकार के शास्त्रों का अध्ययन करेंगे तथा उनका विषद रूप से ज्ञान प्राप्त करेंगे। आप दूत या सन्देश वाहक के कार्य को करने में अत्यन्त निपुण होंगे। आपकी बुद्धि तीक्ष्ण होगी तथा इसी तीक्ष्णता के कारण आप सम्मुख खड़े व्यक्ति के मन की बात को शीघ्र ही जान लेने में सफलता प्राप्त करेंगे। आपका व्यवहार अन्य लोगों के साथ में अत्यन्त ही विनम्र तथा विनयशील रहेगा। फलतः समाज में आप प्रशंसा के पात्र होंगे। आपकी वाणी अति श्रेष्ठ एवं मधुर होगी जो श्रोताओं को प्रसन्नता प्रदान करेगी। आप हंसने और हंसाने के कार्य में दक्ष होंगे। संगीत तथा नृत्य में भी आपकी अभिरूचि रहेगी तथा इनके विषय में आपको पर्याप्त ज्ञान रहेगा।

स्त्रीलोलः सुरतोपचारकुशलताम्रेक्षणः शास्त्राविद्।
दूतः कुञ्चिद् मूर्धजः पटुमति हास्योङ्गित द्यूतवित्।।
चार्वाङ्गाः प्रियवाक् प्रभक्षण रूचिर्गीतप्रियो नृत्यवित्।

क्लीबैर्याति रतिं समुन्नतश्चन्द्रे तृतीयर्क्षगे।।
बृहज्जातकम्

आपकी हथेली मत्स्य चिन्ह से सुशोभित हो सकती हैं। आपकी नसें शरीर से बाहर दृष्टिगोचर होंगी तथा लम्बाई भी आपकी पर्याप्त होगी। आपका रूप अत्यन्त सुन्दर तथा दर्शनीय होगा। काव्य लेखन की प्रतिभा नैसर्गिक रूप से आप में विद्यमान रहेगी। अतः साहित्य के प्रति आपके मन में पूर्ण अभिरूचि रहेगी तथा काव्य सृजन में सफलता प्राप्त करेंगे। आप अपने जीवन में समस्त सांसारिक तथा भौतिक सुखों का उपभोग करने वाले होंगे। लेकिन आप यदा कदा विषय वासनाओं के सुख में भी लिप्त रहेंगे। आप सर्वदा सौभाग्यशाली पुरूष सिद्ध होंगे परन्तु हमेशा स्त्री के वश में रहेंगे तथा उससे पराजित रहेंगे।

उन्नासश्यामचक्षु सुरतविधिकला काव्यकृद्भोग भोगी।
हस्ते मत्स्याधिपाङ्को विषय सुखरतो बुद्धिदक्षः सिरालः।।
कान्तः सौभाग्य हास्य प्रियवचनयुतः स्त्रीजितौ व्यायताङ्गो।
याति क्लीबैश्च रतिकर्म संख्यशशिनि मिथुनगे मातृयुग्मप्रपुष्टः।।
सारावली

आप दीर्घकाल तक जीवित रहेंगे तथा सम्पूर्ण जीवन हास्य प्रिय रहेंगे। आप भ्रमण या यात्रा करने भी इच्छुक रहेंगे घर के अन्दर रहकर भी आनन्द की अनुभूति करेंगे।

दीर्घायुः सुरतोपचारकुशलो हास्यप्रियो युग्मके।।
जातकपरिजातः

आपका सामाजिक क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत रहेगा तथा समाज के सभी वर्गो में आप खूब लोकप्रिय रहेंगे। स्त्रीवर्ग आपसे विशेष रूप से आकर्षित रहेगा तथा आप इनके मध्य प्रिय एवं आदरणीय समझे जाएंगे। आप अपनी सज्जनता तथा योग्यता से समाज में सम्मान तथा गौरव प्राप्त करेंगे।

प्रियकरः करमत्स्ययुतोनरः सुरतसौख्यभरो युवतीप्रियः।
मिथुन राशि गतौहिम गौ भवेत्सुजनतजनताकृत गौरवः।।
जातकाभरणम्

आप श्लिष्टयुक्त स्पष्ट वाक्यों का अपनी भाषा तथा लेखन में प्रयोग करेंगे जिसे लोग आसानी से समझने में सफल रहेंगे। आप अपने बन्धु बान्धवों तथा अन्य सामाजिक लोगों की सेवा तथा सहायता करने में सर्वथा तत्पर रहेंगे। आपकी प्रकृति पित्तकफ युक्त होंगी तथा आचरण हमेशा श्रेष्ठ रहेगा।

मृदुरूपचित्तगात्रः श्लिष्टविस्पष्टवाक्यः।
परजनहितकर्ता पंडितौ हास्य युक्तः।।
प्रकृति शुभचरित्रं श्लेष्मचित्त स्वभावो।
भवति मिथुन जातो गीतवाद्यानुरक्तः।।

जातक दीपिका

आपके नेत्रों में हमेशा चंचलता की बहुलता रहेगी। नृत्य एवं संगीत के आप अनन्य प्रेमी होंगे तथा अपने धनैश्वर्य, दयालुता तथा सद्व्यवहार के कारण दूर दूर यश की प्राप्ति करेंगे। आप दीर्घाकृति से युक्त होंगे तथा भाषण देने की कला में प्रवीण होंगे आप पक्के निश्चय की प्रवृति रखेंगे। जिस बात को एक बार मन में सोच लेंगे उसे पूरा करके ही छोड़ेगे चाहे उसमें कितना ही परिश्रम क्यों न करना पड़े। आप न्यायवादी भी होंगे। शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति उपेक्षा के कारण आपको खांसी या दमे के रोग से भी पीड़ित होना पड़ सकता हैं।

मृदुवाक्यो लोलदृष्टिर्दयालु मैथुनप्रियः।
गान्धर्ववित् कासरोगी कीर्तिभोगी धनी गुणी।।
गौरोदीर्घः पटुर्वक्ता मेधावी च दृढव्रतः।
समर्थो न्यायवादी च जायते मिथुने जनः।।
मानसागरी

आप देवगण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आप श्रेष्ठ मधुर एवं प्रिय वाणी बोलने वाले होंगे जिससे अन्य जन आपसे प्रभावित रहेंगे। आपकी बुद्धि भी सीधी एवं सरल होगी। अपने विचारों को सादगी से प्रकट करना तथा अन्य के विचारों को भी सादगी से ग्रहण करना आपकी विशेषता होगी। आपको सात्विक भोजन करना रूचिकर लगेगा। गुणों के विषय में आप विषद ज्ञान रखेंगे तथा विद्वानों द्वारा प्रतिपादित सद्गुणों से युक्त होंगे। धन, वैभव तथा ऐश्वर्य की समृद्धि से आप हमेशा समृद्ध रहेंगे।

आपका शरीर सुन्दर तथा स्वस्थ रहेगा। आपकी स्वभाव से दानी प्रवृति होगी तथा यथाशक्ति आप जरूरतमन्दों को दान देते रहेंगे जिससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आप दिखावे या ढोंग से हमेशा दूर रहेंगे तथा हमेशा सादगी युक्त जीवन व्यतीत करेंगे। साथ ही आप एक उच्च कोटि के विद्वान भी होंगे।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

मार्जार योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वभाव से ही वीरता के गुणों से युक्त रहेंगे तथा अपने कार्यों को कुशलता पूर्वक सम्पन्न करने में सफल रहेंगे। मीठा स्वाद आपको अत्यन्त रूचिकर लगेगा। आप मिष्ठान्न तथा मिष्ठपान प्रिय होंगे। डर या भय का आप में अभाव रहेगा तथा स्वभाव से ही निर्भीक होंगे एवं निर्भीकता पूर्वक ही जीवन पथ पर चलेंगे। लेकिन यदा कदा आपके स्वभाव में दुष्टता का समावेश होगा। अतः कभी कभी आपका मन

दुष्कर्मो की तरफ भी प्रेरित होगा।

शूरः स्वकार्येदक्षश्च मिष्ठानपान भक्षकः।
निर्भयो दुस्वभावश्च नरो मार्जार योनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मार्जार योनि में उत्पन्न बालक वीर, अपने कार्यो को निपुणता से करने वाला, मिष्ठानपान भक्षण प्रेमी तथा दुष्ट स्वभाव वाला होता है।

आपके जन्भ काल में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं कोई विशेष शारीरिक रूग्णता नहीं रहेगी। वे आपको हमेशा धनार्जन एवं विद्याध्ययन संबंधी कार्यों में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आपकी पारिवारिक उन्नति एवं पालन करने में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी यदा कदा वे आपको नैतिक शिक्षा भी देंगी तथा आपके प्रति उनके हृदय में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। इसके साथ ही जीवन में कई महत्वपूर्ण कार्यो की सिद्धि आप उनके सहयोग से ही करेंगे।

आप की भी माता के प्रति हार्दिक श्रद्धा रहेगी एवं उनकी आज्ञा पालन करने में आप गौरव की अनुभूति करेंगे। साथ ही जीवन में सर्वप्रकार से उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करते रहेंगे। अतः आपकी परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं जीवन में एक दूसरें की सहायता एवं सहयोग का आदान प्रदान करके सुखानुभूति करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक कष्ट की अनुभूति नहीं होगी। उनकी आयु भी लम्बी होगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। विविध प्रकार से धनार्जन करने में वे सफल रहेंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में आपको अपना हार्दिक सहयोग देते रहेंगे। साथ ही आपके विवाह सम्पन्न करने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा एवं आप उनके विश्वास पात्र भी रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता हैं। फिर भी आप नित्य उनकी सेवा तथा वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे

वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थाई रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

आपके लिए आषाढ़ मास, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी तिथियां, स्वाती नक्षत्र, परिघ योग, सोमवार, तृतीय प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा सदैव अशुभ फल दायक हैं। अतः आपको चाहिए कि आप 15 जून से 14 जुलाई के मध्य 2,7,12 तिथियों, स्वाती नक्षत्र, परिघ योग में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, कय विकय आदि महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक मात्रा में होगी। साथ ही सोमवार, तृतीय प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्यो में वर्जित रखें। इस समय पर शारीरिक सुरक्षा तथा स्वस्थता पर भी पूर्ण ध्यान दें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक अशान्ति या शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे सम्य में आपको नियमित रूप से प्रातः एवं सायं गणेश जी के शुभ दर्शन करने चाहिए। साथ ही पन्ना, हरा वस्त्र घी, गेहूं आदि पदार्थो को श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए तथा बुध के तांत्रीय मंत्र के 17000जप करने चाहिए इससे अशुभ फलों में न्यूनता आएगी तथा आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी।

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः।